अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर
इंटरमीडिएट, द्वितीय वर्ष (वाणिज्य एवं कला)
विषय - 'हिन्दी कोर' (गद्य भाग)
पाठ का नाम - पहलवान की ढोलक
लेखक - फणीश्वर नाथ रेणु

(वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर)

1.? 'पहलवान के ढोलक' रचना के रचनाकार कौन है?
उत्तर- फणीश्वर नाथ रेणु

2.? फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उत्तर- सन् 1921 ई० बिहार के पूर्णिया जिले में।

3.? 'फणीश्वर नाथ रेणु' के प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखे?
उत्तर- मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा आदि।

4.? 'फणीश्वर नाथ रेणु' के प्रमुख कहानी संग्रहों के नाम लिखे?
उत्तर- ठुमरी, अग्निखोर, आदिम रात्रि की महक आदि

5.? 'फणीश्वर नाथ रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' कब प्रकाशित हुआ?
उत्तर- सन् 1954 ई०

6.? 'फणीश्वर नाथ रेणु' का देहान्त कब और कहाँ हुआ?
उत्तर- 11 अप्रैल 1977 ई० को पटना में।

(लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर)

प्रश्न.1 ढोल में तो जैसे पहलवान की जान बसी थी - पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर- लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मँजे हुए पहलवान को ललकार बैठा तो सारा जनसमूह, राजा और पहलवानों का समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। हालाँकि लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह न थी, हाँ, ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने शेर के बच्चे को खूब धोया, उठा-उठाकर पटका और हरा दिया। इस जीत में एकमात्र ढोल ही उसके साथ था। अतः जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा और उसे प्रणाम किया।

प्रश्न.2 पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- पहलवान लुट्टन के सुख-चैन के दिन तब शुरू हुए जब उसने चाँद सिंह को कुश्ती में हराकर अपना नाम रोशन किया। राजा ने उसे

दरबार में रखा। इससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन व राजा की स्नेह-दृष्टि मिलने से उसने सभी नामी पहलवानों को जमीन सुँघा दी। अब वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह लम्बा चोंगा पहनकर तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मस्त हाथी की तरह चलता था। हलवाई उसे मिठाई खिलाते थे।

प्रश्न। 'पहलवान की ढोलक' कहानी का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'पहलवान की ढोलक' कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने को रेखांकित करती है। राजा साहब के मरते ही नयी व्यवस्था ने जन्म लिया। पुराने संबंध समाप्त कर दिए गए। पहलवानी जैसा लोकखेल समाप्त कर दिया गया। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने का प्रतीक है। यह व्यवस्था लोक-कलाकार को भूखा मरने पर मजबूर कर देती है।

प्रश्न। पहलवान के बेटों की मृत्यु पर गाँव वालों की हिम्मत क्यों टूट गई?

उत्तर – पहलवान के दोनों बेटे गाँव में फैली महामारी की चपेट में आकर चल बसे। इस घटना से गाँव वालों की हिम्मत टूट गई क्योंकि वे पहलवान को अपना सहारा मानते थे। अब उन्हें लगा कि पहलवान अंदर से टूट जाएगा तथा उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं है।

(दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर)

प्रश्न :- कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर- कहानी में अनेक मोड़ ऐसे हैं जहाँ पर लुट्टन के जीवन में परिवर्तन आते हैं। वे निम्नलिखित हैं

(i) बचपन में नौ वर्ष की आयु में उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई और उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। सास पर हुए अत्याचारों को देखकर बदला लेने के लिए वह पहलवानी करने लगा।

(ii) किशोरावस्था में उसने श्यामनगर दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को हराया तथा 'राज पहलवान' का दर्जा हासिल किया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवानों को जमीन सुँघा दी तथा अजेय पहलवान बन गया।

(iii) वह पन्द्रह वर्ष तक राज-दरबार में रहा। उसने अपने दोनों बेटों को भी पहलवानी सिखाई। राजा साहब के अचानक स्वर्गवास के बाद नए राजा ने उसे दरबार से हटा दिया। वह गाँव लौट आया।

(iv) गाँव आकर उसने गाँव के बाहर अपना अखाड़ा बनाया तथा ग्रामीण युवकों को कुश्ती सिखाने लगा।

(v) अकस्मात सूखा व महामारी से गाँव में हाहाकार मच गया। उसके दोनों बेटे भी इस महामारी की चपेट में आ गए। वह उन्हें कंधे पर लादकर नदी में बहा आया।

(vi) पुत्रों की मृत्यु के बाद वह कुछ दिन अकेला रहा और अंत में चल बसा।

प्रश्न7 गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर– गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल बजाता रहा। इसका कारण था– गाँव में निराशा का माहौल। महामारी व सूखे के कारण चारों तरफ मृत्यु का सन्नाटा था। घर के घर खाली हो गए थे। रात्रि की विभीषिका में चारों तरफ सन्नाटा होता था। ऐसे में उस विभीषिका को पहलवान की ढोलक ही चुनौती देती रहती थी। ढोल की आवाज से निराश लोगों के मन में उमंग जगती थी। उनमें जीवंतता भरती थी। वह लोगों को बताना चाहता था कि अंत तक जोश व उत्साह से लड़ते रहो।